बाइबल टीचर

वर्ष 20 | जुलाई 2023 | अंक 8

सम्पादकीय

क्या आप यीशु के पीछे चल रहे हैं?

आज अक्सर यह बात देखी जाती है कि जो लोग अपने को यीशु का विश्वासी या मसीही कहलाते है क्या वे ईमानदारी से उसके पीछे चल रहे हैं या नहीं? क्या हम ऐसे मसीही तो नहीं है जो केवल नाम से जाने जाते हैं? आईये अपने आपको यीशु की तरह बनकर दिखाने का प्रयत्न करें। एक मसीही व्यक्ति को कैसा होना चाहिए। प्रभु यीशु का व्यवहार तथा स्वभाव कैसा था। बाइबल कहती है ''जैसा यीशु मसीह का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।'' (फिलि. 2:5)। जरा सोचिये आप यीशु के साथ पैदल चल रहे है और आपके साथ पतरस यूहन्ना और दूसरे चेले भी हैं। अपने दिमाग में एक तस्वीर बना लें। आईये यीशु के साथ चलने है।

सबसे पहले हम यीशु के साथ एक शादी में जाते है। सगाई के नाम है गलील/यीशु की माता जी भी उस शादी में मौजूद थी। (यूहन्ना 2:1-3)। यीशु ने वहां एक आश्चर्य क्रम किया और शादी वालों ने यीशु से बोला कि बहुत सारे लोग आ गये हैं और दासरस यानी अंगूर का रस कम पड़ गया है। यीशु ने देखा कि लड़की वाले परेशान हो रहें है उसने कहा दासरस के मटकों में पानी भर दो सो उन्होंने उन्हें मुंहा-मुंह भर दिया तब उसने ने उनसे कहा, अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओं। वे ले गये, जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा जो दासरस बन गया था, और नहीं जानता जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, जो दासरस बन गया था। (यूहन्ना 2:3, 7, 8)। पद 11 में लिखा है ''यीशु ने गलील के माना में अपना यह वहिला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।'' यीशु में एक विशेषता थी कि खुशी में भी शामिल होता था और दुख में भी। जैसे हम शादियों में जन्मदिनों में खुश होते है, वह भी होता था। आपको याद होगा कि जब लाजर की मृत्यु हो गई थी, वह रोया भी था। यीशु के साथ आपको इसलिये चलना है कि वह एक महान् गुरू है, जिसने परमेश्वर की सामर्थ की सबके सामने उस विवाह में दिखाया।

अब चलते हैं यीशु के साथ एक और स्थान पर, और उसके बारे में लिखा है कि जो लोग उसके पीछे आते थे वह उन पर दया दिखाता था। भूखे प्यासे उसके पीछे पीछे चलते थे। लिखा है कि यीशु और प्रेरितों के पीछे इतने लोग आते थे कि उन्हें खाना खाने का समय भी नहीं मिलता था। मरकुस 6:34 में लिखा है ''उसने निकलकर बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे, जिनका कोई रखवाला न हो, और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा। अब चेले ने देखा कि दिन बहुत ढ़ल गया है, और वह जगह भी सुनसान थीं, ताकि अपने लिये कुछ खाने का प्रबन्ध किया जाएं। यीशु ने कहा चेलों से कि तुम इनके खाने का इन्तजाम करो। चेलों ने कहा सौ दिनार की रोटियां ले आते हैं, परन्तु यीशु को पता था कि भीड़ इतनी अधिक है, तो उसने चेलों से कहा, देखो तुम्हारे पास कितनी रोटियां है? उन्होंने कहा पांच रोटी और दो मछली, यीशु ने कहा और चेलों को आज्ञा दी कि सब को हरी धासू पर पांति-पांति से बैठा दो। और तब वे सौ सौ और पचास पचास करके पांति-पांति बैठ गए। यीशु ने उन सब लोगों के बारे में सोचा, उन पर दया की, और वहाँ एक पिकनिक जैसा माहौल बन गया। यहां भी हम देखते है कि यीशु ने परमेश्वर की सामर्थ को दिखाया। यह कोई आसान बात नही है कि इतने सारे लोग यीशु का प्रचार सुनने आये थे और बाद में चेलों ने और यीशु ने यह नही कहा कि चलो भाई अपने-अपने घर जाओ। यह कहना बड़ा आसान है कि जाओ। यह कहाना बड़ा आसान है कि जाओ अग समय बहुत हो गया है।

आपको याद होगा एक बार यीशु ने कहा था जब तू निमन्त्रण दे तो अपनों को न बुलाकर, ऐसे लोगों को बुला जो तेरा बदला न चुका सकें। लूका के 14 अध्याय में हम पढ़ते हैं, लिखा है ''तब उसने अपने नेवता देने वाले से भी कहा, जब तू दिन या रात का भोज करे, तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला, कहीं ऐसा न हो कि वे तुझे नेवता दें, और तेरा बदला हो जाये। परन्तु जब तू भोज करे, तो कंगालों हुण्डों, लगडों और अन्धों को बुला। तब तू धन्य होगा, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं परन्तु तुझे धर्मियों के जी उठने पर इसका प्रतिफल मिलेगा। (लूका) यहां हम यह सीखते है कि कितनी बार हम उन लोगों की कदर करते हैं जो हमारा बदला नहीं चुका सकते? यीशु यह नही सिखाया कि अपने मित्रों या रिश्तेदारों को महत्व न दो, परन्तु बात यह है कि क्या कभी कलीसिया के किसी गरीब या जिसको हम बहुत अलग समझते उन्हें कभी आपने चाय पिलाई, खाना खिलाया? यीशु को खाने का भी शोक था और वह जब कई से कहता है कि में तेरे घर खाना खाने आ रहा हूं। मित्रों के घरों में जाता था, बातचीत करता था और खाना खाता था। उसके अन्दर छोड़े बड़े की भावना नहीं थी। क्या आप यीशु को अपना उदाहरण बनाकर चल रहे हैं?

एक और उदाहरण यीशु के जीवन से सीखते है और यहां हम देखते हैं कि यीशु के हाथ में एक तौलिया या अगोछा लिया और अपनी कमर बांधी। यानि तैयारी के साथ, एक बर्तन में पानी भरकर चेलों के पांव धोने लगा और जिस अंगोछे से उसकी कमर बन्धी थी उसी से पोंछने लगा। (यूहन्ना 13)। अब वह यह यहां यह सिखाने की कोशिशि नहीं कर रहा था कि यह एक रिवाज है जिसे हमें कलीसिया में लागू करना है कई लोग

दिखान के लिये अपने से छोटों या गरीबों के पैर धोते हैं। यीशु ने कभी भी दिखाया नहीं कि बल्कि करके दिखाया कि एक सच्ची जो हमें अपने जीवन से सिखानी है। हम मनुष्यों में दिखाया बहुत रोता है। जब यीशु अपने चेलों के पांव घो रहा था तो चेले भी चाकित होंगे कि हमारे गुरूजी क्या कर रहे हैं। याद रखिये और झूठी शिक्षा के पीछे मत जाईये कि हमें अराधना में एक दूसरे के पैर घोने चाहिए। वह कह रहा था और सिखा रहा था कि मैंने गुरू होकर तुम्हारे पैर धोये, इसलिये अपने अन्दर नम्रता लाओं। कलीसिया में बहुत सारे कार्य करने के लिये होते है, उनमें हाथ बटाईये शायद चर्च भवन की सफाई है, पानी पिलाना है, सेवा के कार्य हैं करके दिखायें। ऐसा व्यवहार ने रखें कि हम अलग है, हम पास्टर के परिवार से हैं, यीशु से सीखिये। यदि आप सच मच में यीशु के पीछे चलना चाहते हैं, तो छोटे छोटे काम तो करने पड़ेंगे। झाडु भी लगानी पड़ेगी, धूल मिट्टी भी साफ करनी पड़ेगी। यीशु ने कहा तुम यह सब जानते तो हो पर उस पर चलते नहीं हों, और यदि चलो तुम धन्य हो।

आप यीशु के साथ जब चल रहे हैं तो एक और बात देखें और वो यह कि वह दूसरों के दुख और दर्द को समझता था। वह देखता है कि दो बहनें मार था और यरियम बहुत दुखी हो कर से रहे हैं क्योंकि उनके भाई लागर की मृत्यु हो गई थी। यीशु जब उनके पास गया तो उसने वहां दुखी होकर सहुनुभूति दिखाई और उनके भाई को जीविति कर दिया और वहां परमेश्वर की बड़ाई हुई तथा बहुत सारे यहूदियों ने विश्वास किया। यदि किसी के घर में कोई बीमार है या किसी कि मृत्यु हो गई है तो क्या हम उनके दास दुख बांटने जाते हैं। यहां कई बार हम चूक जाते हैं। यीशु की एक खासियत थी कि जब किसी को उसकी जरूरत होती थी तो वह वहां पहुंच जाता था। आपको शायद याद होगा जब यीशु से न्याय के दिन की बात की था, उसने कहा था उसदिन न्यायधीश यानी प्रभु उनसे कहेगा कि, ''हे स्त्रापित लोगों मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओं जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। क्योंकि ये भूखा था, तुमने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं पियासा था, तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया में परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया, मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए बीमार और जेल में था, और तुम ने मेरी सुधी न लीं। तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच्च कहता हूं कि तुम जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक साथ नहीं किया वह मेरे साथ भी नहीं किया। हम यीशु की बात तो करते है परन्तु उसकी बताई हुई बातों पर नहीं चलते। यीशु अपने समय में फरिसियों बातें करता था और आज भी हमारे बीच में आधुनिक फरीसि मौजूद है,'' इनके बारे में लिखा है ''हे शास्त्रियों और फरीसियो तु पर हाय, तु में पादी और साफ और जीरें का दसवां अंश देते हो। परन्तु तु ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है, चाहिए था कि इन्हें भी न छोड़ते। यह लोग व्यवस्था पर चलते थे तथा बड़ी बड़ी बातें सिखाते थे परन्तु यीशु ने उनसे कहा हे अन्धों अगुवो, तुम मच्छर को तो छान लेते हो परन्तु अंठ को निगल जाते हो। फिर वह कहता हे कपटीं साखियों और फरीसियों तुम पर हाय, तुम कटोरे और थाली को उपर उपर से तो मांजते हो, परन्तु वे भीतर अंधेर असंयम से भरे हुए हैं। हे अन्धें फरीसी पहिले

कटोरे थाली को भीतर से साफ ले कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों। हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियो तुम पर हाय तुम चना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो उपर से तो सुन्दर दिखाई देती हे, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की यलिनता से भरो है। तुम अपने बापदादों के पाप का घड़ा भर दो। फिर वह उनसे कहता है, हे सांपों हे करेतों के बच्चों तुम नरक के दण्ड से क्यों कर बचोगे? यदि आप यीशु के चेले हैं तथा एक मसीही हैं तो जरा सोचिये तो यीशु के साथ आपकी यह यात्रा कैसी है?

क्या आपका स्वभाव यीशु जैसा है? पौलुस कहता है, जैसा यीशु मसीह का स्वभाव था वैसा तुम्हार भी हो। (फिलि 2:5)। यीशु ने कहा था,''धन्य है वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जायेगी (मत्ती 5:7)। क्यों एक मसीही होते हुए आपने किसी के प्रति दया दिखाई है? कही आप ऐसे तो नही हैं जो कहते हैं यह हमारा काम नहीं है। आईये यीशु के साथ सच्चाई से चले और दिखायें कि हम सच्चे मन से उसकी सेवा कर रहे हैं।

मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित नहीं रहेगा

सनी डेविड

लगभग दो हजार वर्ष हुए जबकि प्रभु यीशु ने ये शब्द कहे थे, ''कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक उस वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।'' (मत्ती 4:4)। शारीरिक दृष्टिकोण से, रोटी मनुष्य की एक बड़ी ही प्रमुख आवश्यकता है। परन्तु मनुष्य का एक ऐसा भाग है जिसे अन्न की बनी रोटी से तृप्त नहीं किया जा सकता। क्योंकि आत्मा की तृप्ति केवल आत्मिक भोजन के द्वारा ही हो सकती है। रोटी मनुष्य के लिए आवश्यक है, और परमेश्वर ने मनुष्य को उसकी इस आवश्यकता की पूर्ती के लिए बोने के लिए बीज और सिंचाई के लिए जल दिया है। मनुष्य केवल बोता है, परन्तु परमेश्वर अपनी सामर्थ से उन निर्जीव दानों को फसल का रूप देता है। परन्तु मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, पर हर एक उस वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुख से निकलता है। इसीलिए प्रभु यीशु ने एक बार इस प्रकार कहा था, कि ''नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो परन्तु उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।'' (यूहन्ना 6:27)। इसका अर्थ यह नहीं है, कि हम बीज न बोएं, खेती न करें, फसल न काटें और परिश्रम करके रोटी न खाएं। परन्तु इसका अर्थ निश्चित रूप से यह है कि हम नाशमान रोटी को प्राप्त करने के लिए अपना सारा परिश्रम और अपनी सारी ताकत और अपना सारा समय न बरबाद कर दें। क्योंकि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक उस वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुख से निकलता है। जब तक हम इस संसार में जीवित हैं हमें रोटी की आवश्यकता है। परन्तु मान लीजिए, एक मनुष्य अपने घर को अनाज की बोरियों से भर लेता है किन्तु तभी अचानक उसकी मृत्यु हो जाती है। तब उस

अनाज का क्या होगा? क्या उस से उस मनुष्य को कुछ भी लाभ होगा? और वास्तव में यह बात जगत की प्रत्येक वस्तु के विषय में कही जा सकती है। प्रभु यीशु ने इसी महत्वपूर्ण बात को समझाने के लिए एक बार एक दृष्टान्त देकर इस प्रकार कहा था:

''चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो। क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुयायत से नहीं होता।'' और फिर यीशु ने दृष्टान्त देकर आगे यूँ कहा, ''कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उसने कहा; मैं यह करूंगा : मैं अपनी बखारियां तोड़कर उन से बड़ी बनाऊंगा; और वहां अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगा : और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है'' इसलिए, ''चैन कर, खा, पी, सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा : तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा?'' और फिर यीशु ने कहा, कि, ''ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।'' (लूका 12 : 15:21)।

मित्रो, आज हमारे इस उन्नतिशील जगत के भीतर प्रभु यीशु के ये शब्द हम में से हर एक के लिये कितने अधिक चेतावनीपूर्ण है। आज जबकी मनुष्य केवल पैसा कमाने के पीछे दीवाना है। वह रोटी, कपड़े और मकान के पीछे भाग रहा है। आज जबकि उसका सारा परिश्रम, सारी बुद्धि, और सारी ताकत और सारा समय संसार की वस्तुओं को प्राप्त करने में बरबाद हो रहा है। जबकि वह सोच रहा है, कि वह अपने लिये जोड़ रहा है, बचा रहा है, और इकट्ठा कर रहा है। वास्तव में सच्चाई यह है कि वह उस से भी कई गुना अधिक खो रहा है। क्योंकि वह उसे बचा रहा है जो नाशमान है, पर उसे खो रहा है जो अनन्त और अमर है। वह अपने शरीर को बचा रहा है परन्तु अपनी आत्मा को खो रहा है। उसे शायद अपने धन-सम्पत्ति पर गर्व हो, कदाचित् उसे अपने ओहदे और अपनी शक्ति पर घमण्ड हो। वह उन्हें लगातार वटोरता चला जाता है, और अपने मन में सोचता है कि मैं कितना भाग्यशाली हूं, मेरे पास कितना अधिक है, मेरे पास बहुत वर्षों के लिए और कदाचित् जीवन भर के लिए, बहुत कुछ है। परन्तु यह उसका अपना दृष्टिकोण है। वास्तव में यदि ऐसा मनुष्य अपने आपको परमेश्वर के दृष्टिकोण से जांचे; यदि वह अपने आपको परमेश्वर के वचन के आईने में देखे। तो वह वास्तव में पाएगा कि वह हकीकत में एक मूर्ख है। क्योंकि उसने उन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए परिश्रम किया है जो वास्तव में उसकी नहीं हो सकतीं। परन्तु जो वस्तु उसकी अपनी है उसी को उसने खो दिया, अर्थात् अपनी आत्मा को नरक में जाने से बचाने के लिए उस मनुष्य ने कुछ नहीं किया। हजारों वर्ष पूर्व बाइबल की एक पुस्तक में धर्मी अय्यूब ने लिखकर इस प्रकार कहा था, ''जब ईश्वर भक्तिहीन मनुष्य का प्राण ले ले, तब यद्यपि उसने धन भी प्राप्त किया हो, तौभी उसकी क्या आशा रहेगी?'' (अय्यूब 27:8)। क्या आप ने सुना? यानि एक ऐसा मनुष्य जो न परमेश्वर से डरता है और न उसकी सुनता है और न उसकी मानता है, यदि परमेश्वर उसका प्राण ले लें, अर्थात् यदि उसकी मृत्यु

हो जाए तो उसकी क्या आशा रहेगी? वह परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश पाने की आशा नहीं रख सकता। और न ही वह यह आशा रख सकता है कि उसका धन सम्पत्ति उसे नरक में जाने से बचा लेगा। उसे दोनों की ही हानि उठानी पड़ेगी। इसीलिए प्रभु यीशु ने एक जगह फिर कहा, कि यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, अर्थात अपनी आत्मा को खोए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? (मत्ती 16:26)।

यदि मनुष्य सरकार द्वारा ठहराए किसी नियम का उल्लंघन करता है, तो वह जुर्माना देकर छूट जाता है। कुछ समय पूर्व मैंने एक गुलाम की कहानी पढ़ी थी। कुछ सदी पहिले गुलामी की प्रथा बड़ी ही प्रचलित थी। लोग जो धनी होते थे उनके पास अनेक गुलाम या दास उनकी जायदाद होती थी, अर्थात वे उन्हें जैसे चाहें वैसे रखते थे और जैसे चाहें वैसे इस्तेमाल करते थे। और आश्वयकता न रहने पर वे किसी भी दास को किसी अन्य मालिक को बेच देते थे। यह दास बहुत ही बूढ़ा हो गया था और वह सब काम नहीं कर पाता था जो उसका मालिक उस से करवाना चाहता था। सो उसके मालिक ने उसे बेच देने की योजना बनाई। और वह उसे बाजार में लाकर नीलाम करने लगा। परन्तु जब बोली एक सौ रूपए पर आकर अटक गई तो उसने उसे उसी दाम पर दे देना चाहा। किन्तु तभी उस बूढ़े गुलाम ने अपनी जेब से दो नोट निकालकर कहा, कि मैं दो सौ रूपए लगाता हूं। ये दो सौ रूपए उसने अपने सारे जीवन में इकट्ठे किए थे, यह उसके जीवन भर की सम्पत्ति थी। परन्तु उसे उस सम्पत्ति से भी अधिक अपनी आज़ादी प्यारी थी। सो वह दो सौ रूपए देकर स्वतंत्र हो गया। परन्तु मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? वह अपनी आत्मा को नरक में जाने से बचाने के लिए क्या देगा? मनुष्य अपने धन से जगत की बड़ी-बड़ी वस्तुएं खरीद सकता है। परन्तु वह अपनी आत्मा के उद्धार को नहीं खरीद सकता। मनुष्य अपने प्रयत्न से जगत की सारी वस्तुएं प्राप्त कर सकता है। परन्तु वह अपने पाप के दण्ड को कोई भी प्रयत्न करके नहीं मिटा सकता।

इसलिए, मनुष्य को सबसे अधिक परमेश्वर की आवश्यकता है। उसे सबसे अधिक परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है, जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, और जो मनुष्य को बताता है कि उसे अपनी आत्मा को बचाने के लिए क्या करना चाहिए। और मित्रों, इस लेख का एक मात्र यही उद्देश्य है, अर्थात परमेश्वर के वचन को आप सबके सम्मुख रखना। बाइबल परमेश्वर का वचन है, अर्थात इस पुस्तक में परमेश्वर के मुख से निकला हुआ वचन लिखा हुआ है। बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है, और वह प्रत्येक मनुष्य का उद्धार करना चाहता है। परमेश्वर का वचन हमें बताता है, कि प्रत्येक मनुष्य उसकी दृष्टि में पापी है। परन्तु उसके पुत्र यीशु मसीह की क्रूस पर मृत्यु के द्वारा हर एक मनुष्य उसमें होकर परमेश्वर के निकट धर्मी बन सकता है। पवित्र बाइबल में इस प्रकार लिखा है : ''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियों 6:23)। अर्थात, जब तक हम पाप में रहते हैं तो हम आत्मिक दृष्टिकोण से मरी हुई दशा में रहते हैं, परन्तु जब हम प्रभु यीशु मसीह में आ जाते है तो हम उसके द्वारा अनन्त जीवन पाने

के योग्य बन जाते हैं। क्योंकि यीशु ने हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए ही क्रूस के ऊपर अपना बलिदान दिया था। वह परमेश्वर के अनुग्रह से हम सबके पापों के बदले में मारा गया था। बाइबल में लिखा है, मित्रो, कि यदि कोई भी मनुष्य प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाएगा, और अपने सब पापों से मन फिराएगा, और फिर अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेगा, अर्थात प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने और जी उठने की समानता पर जल-रूपी-कब्र के भीतर गाड़े जाकर उसमें से बाहर आएगा। तो वह क्रूस पर प्रभु यीशु की मृत्यु के कारण उद्धार पाएगा, अर्थात उसके पाप क्षमा हो जाएंगे। (रोमियों 6:3-6; प्रेरितों 2:38)। और फिर बाइबल हमें बताती है, कि यदि हम प्रभु के वचन को मानने के द्वारा उस में बने रहेंगे तो हम उसके द्वारा स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाएंगे। (यूहन्ना 3:16, 36; 1 यूहन्ना 2:3-6)।

और अब अन्त में, बाइबल में लिखे इन शब्दों को सुनिए, परमेश्वर का वचन कहता है, कि, ''तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है : और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।'' (1 यूहन्ना 2:15-17)।

क्या आप परमेश्वर की इच्छा पर चल रहे है? यह जानना आप के लिए बड़ा ही आवश्यक है। क्योंकि एक दिन जबकि सब कुछ नाश हो जाएगा केवल वही मनुष्य सर्वदा बना रहेगा जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है।

कलीसिया की पहचान

जे. सी. चोट

यदि आपका कोई मित्र बहुत समय से खोया हुआ हो तो उसका पता लगाने के लिये आप क्या करेंगे? स्वभावत: उसे ढूंढ़ने से पहले आप उसकी पहचान के सब चिन्हों को एकत्रित करेंगे व फिर उसे ढूंढ़ना आरंभ करेंगे। मिल जाने पर केवल उसी व्यक्ति को जो पहचान के सभी चिन्हों से समानता रखता होगा, आप स्वीकार करेंगे अर्थात् जिसकी खोज आप कर रहे थे। इसी रीति से, संसार में बहुत सी कलीसियाएं हैं। कोई व्यक्ति यह किस प्रकार से जान सकता है कि कौन सी कलीसिया सही, व सच्ची है? कोई व्यक्ति कैसे जान सकता है कि मसीह की कलीसिया कौन सी है? वस्तुत: आप पहचान के सब चिन्हों को एकत्रित करें और तब विभिन्न कलीसियाओं को उन से मिलाएं। जब आप उस एक कलीसिया का पता लगा लें जो पहचान के प्रत्येक चिन्ह से समानता रखती है, केवल तभी आप विश्वास के साथ कह सकेंगे कि आप को सही व

सच्ची कलीसिया मिल गई है। परन्तु पहचान के चिन्ह क्या है? वे कहां मिल सकते हैं? इसका उत्तर हमें बाइबल में से मिलता है।

कलीसिया की पहचान के सभी सही चिन्ह बाइबल में मिलते है। इसलिये, इसके विषय में हम उसमें देख लें कि वे क्या हैं:

1. मसीह ने कलीसिया को बनाया। "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा : और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)।

2. इसका आरंभ यरूशलेम में हुआ। यह लूका 24:45-49 और प्रेरितों 2 अध्याय से स्पष्ट है।

3. इसकी स्थापना लगभग 33 ई. स. में हुई, पिन्तेकुस्त के दिन और इसका ज्ञान भी प्रेरितों 2 अध्याय से होता है।

4. कलीसिया ने मसीह का नाम धारण किया। अनेक मंडलियों का उल्लेख करते हुए, पौलुस ने लिखा, "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों 16:16)। तथा कुरिन्थुस में कलीसिया से उसने कहा, "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।" (1 कुरिन्थियों 12:27)। परन्तु देह क्या है? कलीसिया। (इफिसियों 1:22, 23)।

5. इसके सदस्य मसीही कहलाए। "और चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।" (प्रेरितों 11:26)। "तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?" (प्रेरितों 26:28)। "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।" (1 पतरस 4:16)। अत: स्मरण रहे, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों 4:12)।

6. केवल मसीह ही इसका सिर है। "और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" (कुलुस्सियों 1:18)।

7. केवल एक ही है। "एक ही देह है, और एक आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।" (इफिसियों 4:4)। किन्तु देह क्या है? यह कलीसिया है। (कुलुस्सियों 1:18)। इसलिये, जबकि एक ही देह है, और देह कलीसिया है, तब केवल एक ही कलीसिया है।

8. कलीसिया में प्रवेश पाने के कुछ विशेष नियम है। अर्थात् विश्वास (इब्रानियों 11:6), मन फिराना (प्रेरितों 17:30), विश्वास का अंगीकार करना (रोमियों 10, 9, 10), और बपतिस्मा। (मरकुस 16:16)। जिस व्यक्ति का उद्धार होता है उसे प्रभु यीशु कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों 2:47)। इसी प्रकार से रोमियों 6:3, 4 व गलातियों 3:26, 27 और 1 कुरिन्थियों 12:13 से भी यही शिक्षा मिलती है कि विश्वासी जन मसीह और उसकी कलीसिया में एक होने के लिये बपतिस्मा लेते है। इन

आज्ञाओं को मानने के द्वारा मनुष्य का जन्म कलीसिया अर्थात् राज्य में होता है। (यूहन्ना 3:3-5)।

9. कलीसिया की उपासना विशेष है। सब मसीही सप्ताह के पहले दिन एकत्रित होते हैं (प्रेरितों 20:7), गाने के लिये (इफिसियों 5:19), प्रार्थना करने के लिये (प्रेरितों 2:42), परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिये (2 तीमुथियुस 2:15), प्रभु भोज में भाग लेने के लिये (1 कुरिन्थियों 11), और चंदा देने के लिये (1 कुरिन्थियों 16:2)।

10. कलीसिया की शिक्षा केवल बाइबल पर ही आधारित है। किसी को भी यह अधिकार नहीं दिया गया कि वह बाइबल में कुछ भी बढ़ाए, या उसमें से कुछ भी निकाले या उसे बदले। (प्रकाशितवाक्य 22: 18, 19; गलतियों 1: 6-11)। केवल बाइबल ही कलीसिया का एकमात्र धर्मसार है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी पुस्तकें व धर्मसार अस्वीकृत है।

11. कलीसिया का संगठन निश्चय ही परमेश्वर की कही गई योजना के अनुसार होना चाहिए। मसीह कलीसिया का सिर है (इफिसियों 5:23) और प्रत्येक मंडली में उसके अपने अध्यक्ष व सेवक होने चाहिए। (1 तीमुथियुस और 3 तीतुस 1)। पृथ्वी पर प्रभु की कलीसिया का न तो कोई प्रधान है न कोई प्रधान कार्यालय और न ही इसका कोई राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मनुष्य द्वारा बनाया हुआ संगठन है।

12. कलीसिया का उद्देश्य तीन प्रकार के कार्य करना है। अर्थात् सुसमाचार प्रचार करना (मरकुस 16:15, 16), दीनों की सहायता करना (गलातियों 6; याकूब 2), और सदस्यों की आत्मिक उन्नति के लिये कार्य करना (इब्रानियों 3:12-14)।

13. प्रत्येक मसीही को चाहिए कि वह भक्तिपूर्ण मसीही जीवन निर्वाह करे। वह संसार से प्रेम नहीं कर सकता (1 यूहन्ना 2:15; याकूब 4:4), इसके विपरीत उसमें आत्मिक फल होने चाहिए (गलातियों 5:22, 23)। जीवन का मुकुट केवल वही प्राप्त करेगा जो प्राण देने तक विश्वासी रहेगा (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

कलीसिया की पहचान के यह कुछ चिन्ह हैं। इन के विषय में हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए आदर्श अर्थात् बाइबल से ज्ञात होता है। अब, जिस कलीसिया के सदस्य आप है उसकी तुलना इनसे कीजिए। उदाहरणार्थ, आरंभ के चार चिन्हों को ले लें। अपने आप से पूछें, जिस कलीसिया में मैं हूं "उसे किस ने बनाया?" क्या उसे मसीह ने स्थापित किया या किसी मनुष्य ने? तब पूछें, "इस कलीसिया की स्थापना कहां पर हुई थी?" क्या इसका आरंभ यरूशलेम में हुआ था या किसी अन्य स्थान पर? फिर पूछें, "इस कलीसिया की स्थापना कब हुई थी?" यदि इसकी स्थापना 33 ई. स. के बाद में हुई है तब यह प्रभु की कलीसिया नहीं हो सकती। और अंत में, स्वयं से पूछें, "इस कलीसिया का नाम क्या है?" यदि यह मसीह का नाम भी अपने ऊपर नहीं रखती, तब यह मसीह की कैसे हो सकती है? इसी प्रकार के अन्य प्रश्न भी आप पूछ सकते हैं, परन्तु यह निर्णय करने के लिये कि जिस कलीसिया में आप है वह प्रभु की है या किसी मनुष्य की यही पर्याप्त है। इसी प्रकार से अन्य कलीसियाओं की तुलना भी आप इन पहचान के चिन्हों से कर सकते हैं, यह निश्चय करने के लिये कि वे परमेश्वर की है या मनुष्यों

की। मेरा विश्वास है कि आप अंतर देख सकेंगे यदि आप अपने आप से ईमानदार है।

यदि आप जान लेते हैं कि जिस कलीसिया के आप सदस्य है वह बाइबल की एक व सच्ची कलीसिया नहीं है; तब आप से मेरा यह आग्रह है कि आप उसे त्याग दें, सत्य को सीखें, उसे मानें, ताकि प्रभु आपको उस कलीसिया में मिलाए जिसके विषय में आप परमेश्वर के वचन में पढ़ते हैं। तब आप उस एक कलीसिया के सदस्य होंगे जिसमें सब उद्धार पाए हुए मिलाए जाते हैं।

पुराने नियम में उसकी भूमिका

बेटी बर्टन चोट

क्या वचन (जो समय पूरा होने पर 'देहधारी' होकर जगत में आया था- यीशु मसीह) मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आने से पहले, जगत में जो कुछ भी हो रहा था उसके प्रति कार्यरत था? या क्या वह एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह अपने पिता के सीधे हाथ पर बैठकर इस बात की बाट जोह रहा था कि कब उसे पृथ्वी पर भेजा जाएगा?

इस प्रश्न का सही उत्तर हमें बाइबल में से ही पढ़कर इस प्रकार मिलता है:

''यहोवा जो इस्राएल का राजा है, अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह यों कहता है मैं सबसे पहला हूं, और मैं ही सदा रहूंगा, मुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है ही नहीं'' (यशायाह 44:6)।

प्रकाशितवाक्य 1:8 में यीशु मसीह ने कहा था, ''प्रभु परमेश्वर, जो है और जो था, और जो आनेवाला है, जो सर्व शक्तिमान है यह कहता है, 'मैं ही अलफ़ा और ओमेगा हूं।'''

ये दोनों ही हवाले उसी एक प्रभु की ओर संकेत करते हैं जो इस्राएलियों को मिस्र देश की बंधुआई में से छुड़ाकर लाया था, और वह प्रभु मसीह था।

''....यहोवा ने अपने दास को छुड़ा लिया है। जब वह उन्हें निर्जल देशों में ले गया, तब वे प्यासे न हुए, उसने उनके लिये चट्टान में से पानी निकाला, उसने चट्टान को चीरा और जल बह निकला।'' (यशायाह 48:20, 21)

''...हमारे सब बाप-दादे बादल के नीचे थे.....और सबने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।'' (1 कुरिन्थियों 10:1-4)

ये दोनों ही हवाले उसी एक प्रभु की ओर संकेत करते हैं जो इस्राएलियों को मिस्र देश की बंधुआई में से छुड़ाकर लाया था, और वह प्रभु मसीह था।

क्या शाऊल का उद्धार दमिश्क के मार्ग पर हुआ था?

केन टायलर

बहुत से प्रचारकों द्वारा जोर दे देकर इस बात की समर्थन किया गया है कि तरसुसवाले शाऊल का उद्धार नगर में उसके पहुंचने से पहले दमिश्क के मार्ग पर ज्योति दिखने के समय हो गया था। मित्रो, यदि आप उसके मनपरिवर्तन का अध्ययन ध्यान से करें तो आप जान पाएंगे कि ऐसा नहीं है।

शाऊल के मनपरिवर्तन की बात प्रेरितों 9 अध्याय में मिलती है। प्रेरितों 22 और प्रेरितो 26 में उसने अपने मनपरिवर्तन में जो जो हुआ उसको दोहराया। शाऊल मसीही लोगों को गिरफ्तार करने और उन्हें बांधकर-बांधकर यरूशलेम लाने के लिए दमिश्क जा रहा था (प्रेरितों 9:2)। जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा तो वहां आकाश से उसके चारों ओर एक ज्योति चमकी (प्रेरितों 9:3)। वह भूमि पर गिर गया और उसने एक आवाज यह कहते हुए सुनी, ''हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है'' (प्रेरितों 9:4)। फिर शाऊल ने उत्तर दिया, ''हे प्रभु, तू कौन है?'' प्रभु ने उत्तर दिया, ''मैं यीशु हूं, जिसे तू सताता है'' (प्रेरितों 9:5)। शाऊल जो यह सब देखकर भय से कांप रहा था और अचम्भित था, उसने संसार का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा: ''हे प्रभु, मैं क्या करूं?'' प्रभु ने उसे उठकर नगर में जाने को कहा और कहा कि जो कुछ तूझे करना है वह तूझे वहां बता दिया जाएगा (प्रेरितों 9:6)।

प्रेरितों 9:8 बताता है कि शाऊल अंधा हो गया था और उसे हाथ पकड़कर दमिश्क में पहुंचाया गया। प्रेरितों 9:9 कहता है कि वह तीन दिन तक अंधा रहा और उसने न कुछ खाया और न पीया। प्रेरितों 11 आगे बताता है कि दमिश्क में वह प्रार्थना कर रहा था। (मैं यहां यह बता दूं कि यह उसके पश्चात्तापी मन को दिखाता है।)

वहां पर दमिश्क में हनन्याह नाम का एक चेला था। प्रभु ने हनन्याह को शाऊल के पास उसे यह बताने के लिए भेजा कि उसे क्या करना है (प्रेरितों 9:6, 11)। हनन्याह के मन में शाऊल के प्रति संदेह था क्योंकि वह उसके द्वारा मसीही लोगों का सताव किए जाने के बारे में जानता था। परन्तु प्रभु ने उसे बताया कि शाऊल उसका चुना हुआ पात्र है (प्रेरितों 9:13)। फिर हनन्याह शाऊल के पास गया, उसकी आंखें ठीक कीं और उसे बताया कि उसे क्या करना है (प्रेरितों 9:17-18)। प्रेरितों 22:16 में शाऊल (पौलुस) के अनुसार हनन्याह ने उससे कहा, ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल।''

''तब हनन्याह नामक व्यक्ति मेरे पास आया, और खड़े होकर मुझ से कहा, 'हे भाई शाऊल, फिर देखने लग।' ... अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:12-16)

कहानी साफ है, शाऊल का उद्धार दमिश्क के मार्ग पर नहीं बल्कि दमिश्क में हुआ था जहां हनन्याह द्वारा उसे जो करने को कहा गया था कि उठ बपतिस्मा ले और अपने पापों को धो डाल, उसने उसे मान लिया।

याद रखें कि प्रभु ने स्वयं शाऊल से कहा था, ''परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है वह तुझ से कहा जाएगा'' (प्रेरितों 9:6)। उसे नगर में बताया जाना था कि उसे क्या करना है। हनन्याह ने उसे बताया, उसने इसे माना, और उसका उद्धार हो गया।

यदि असल में दश्मिक के मार्ग पर ज्योति का दर्शन पाने से शाऊल का उद्धार हो गया था तो यह एक अजीब मनपरिवर्तन होना था। यदि ऐसा होता, तो शाऊल को भी इसका पता नहीं होना था, क्योंकि उसने प्रभु से पूछा था कि वह क्या करे। और यदि ऐसा था तो यीशु को इसका पता नहीं था, क्योंकि उसने शाऊल से कहा कि नगर में जाए और वहां उसे बताया जाएगा कि क्या करना है। और यदि उसका उद्धार मार्ग पर हो गया था तो वह उद्धार पाए हुए किसी भी व्यक्ति से जिसके बारे में हमने पढ़ा हो, सबसे दयनीय था क्योंकि वह अंधा था, उसने कुछ खाया नहीं था या पानी की एक बूंद भी पी नहीं थी और वह तीन दिन तक प्रार्थना करता रहा थां क्या लगता है कि ऐसा व्यक्ति उद्धार पाया हुआ होगा? नहीं। पश्चात्तापी शाऊल का उद्धार तब हुआ जब उसने उठकर अपने पापों को धोने के लिए बपतिस्मा लिया। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं यदि हमने बपतिस्मा नहीं लिया है तो वैसा ही करें।

मसीह की व्यवस्था

जैरी बेट्स

हमने देखा है कि व्यवस्था का उद्देश्य था और जब वह उद्देश्य पूरा हो गया तो इसे हटाने का समय आ गया। मत्ती 5:17-18 में यीशु ने कहा, ''यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।'' बहुत से लोग यीशु के शब्दों के अर्थ को घुमाना चाहते हैं और यह कहना चाहते हैं कि यीशु व्यवस्था को केवल पूरा करने के लिए आया था न कि इसे हटाने के लिए। परन्तु जब कोई चीज अपना उद्देश्य पूरा कर लेती है तो उसे रखने का क्या मतलब होता है? ध्यान दें कि यीशु ने क्या कहा था। वह व्यवस्था को पूरा करने के लिए आया था और उसे कहा था कि बिना पूरा हुए व्यवस्था एक भी बात नहीं टलेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि पूरा हो जाने पर यह टल जानी थीं इस प्रकार यीशु कह रहा था कि व्यवस्था के पूरी तरह से पूरा हो जाने पर, जो कि क्रूस पर हो गया था, व्यवस्था को हटा दिया जाना था। अपनी मृत्यु से थोड़ा पहले यीशु ने यह सरल शब्द कहे थे, ''पूरा हुआ'' (यूहन्ना 19:30)। उस काम

को जिसे यीशु पूरा करने के लिए आया था यानी व्यवस्था को पूरा करना, मनुष्य के लिए पाप का बलिदान देना और एक नई और एक नई और उत्तम वाचा ठहराना, पूरा हो गया था।

परन्तु हमारे पास एक नई वाचा है इसलिए हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि पूरानी व्यवस्था किसी काम की नहीं है। यह आज भी हमें कुछ निर्देश देती ही रहती है, रोमियों 15:4 में पौलुस ने लिखा है, ''जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।'' पुराना नियम हमें परमेश्वर, पाप, मसीह के आने, बलिदानों, आदि बहुत सी बातों के बारे में वैसे ही सिखाता है जैसे यह सदियों पहले यहूदियों को सिखा सकता था। बिना पुराने नियम के हम नये नियम के बहुत से भागों को समझ नहीं सकते थे। इसलिए यह अध्ययन आज भी उपयोगी है पर परमेश्वर की सेवा में हमें क्या करना है और कैसे करना है यह बताने का अधिकार इसे नहीं है। अब हम पुरानी व्यवस्था के अधीन नहीं रहे क्योंकि यह पुरानी वाचा का भाग है।

यीशु एक नई और उत्तम वाचा को ठहराने के लिए आया। क्रुस पर यीशु की मृत्यु के समय उसने पुरानी व्यवस्था को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया (कुलुस्सियों 2:14)। इसके साथ ही उसने एक नई व्यवस्था ठहरा दी। ''क्योंकि जहां वाचा बान्धी गई है वहां वाचा बान्धनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धने वाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। इसीलिए पहिली वाचा बिना लोहू के नहीं बान्धी गई'' (इब्रानियों 9:16-18)। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक हमें मसीह की आवश्यकता को समझाने के लिए एक उदाहरण का इस्तेमाल कर रहा है। लोग आम तौर पर वसीयत करते हैं जिसमें वे बता देते हैं कि उनके मरने के बाद उनकी सांसारिक सम्पत्ति किसे और कैसे दी जानी चाहिए। परन्तु जब तक वसीयत करने वाला व्यक्ति मर नहीं जाता, तब तक वह वसीयत किसी काम की नहीं होती। वह जब चाहे उस वसीयत को बदल सकता है और उसके बाद की गई कोई भी वसीयत पहले की गई वसीयत को रद्द कर देती है। इसी प्रकार से मसीह की नई वाचा वसीयत के देने वाले यानी यीशु की मृत्यु से पहले किसी काम की नहीं थी। उसने अपनी नई वाचा को देने के लिए अपना लहू वैसे ही बहाया जैसे जानवरों के लहू के साथ मूसा की व्यवस्था दी गई थी। इस प्रकार नई वाचा को पुरानी वाचा की जगह क्रुस पर स्थापित किया गया। यीशु उत्तम वाचा का जामिन बना (इब्रानियों 7:22)।

यह नई वाचा पुरानी वाचा में जोड़ी नहीं गई बल्कि इसने उसकी जगह ले ली। यह तथ्य ही कि नई वाचा है यह संकेत देता है कि पुरानी वाचा को हटा दिया गया है। ''नई वाचा के स्थापन से उस ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराया, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है'' (इब्रानियों 8:13)। ''फिर यह भी कहता है, कि देख, मैं आ गया हूं, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं; निदान, वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे'' (इब्रानियों 10:9)। वह दो वाचाओं की आज्ञा नहीं दे सकता। जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था कि अब हम मसीह में विश्वास के अधीन

हैं और अब हम पुरानी व्यवस्था यानी शिक्षक के अधीन नहीं रहे (गलतियों 2:25)। न ही हमें वापस जाने या नये के साथ पुराने को मिलाने की इच्छा करनी चाहिए। गलतियों 5:4 में पौलुस ने लिखा, ''तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।'' हमारा उद्धार अनुग्रह से हुआ है (इफिसियों 2:8), पर जब हम पुरानी व्यवस्था को मानने का प्रयास करते हैं तो पौलुस साफ कहता है कि हम अनुग्रह से गिर जाते हैं और इस प्रकार उस एकमात्र मार्ग को, जिससे हमारा उद्धार हो सकता है खो देते हैं। जैसा कि उम्मीद की जा सकती है कि यह नई व्यवस्था पुरानी व्यवस्था से कहीं अधिक महिमा से भरी है और इसमें उससे कहीं उत्तम बातें हैं। व्यवस्था इतनी महिमायुक्त थी कि इसे मूसा को दिए जाने के समय, इस्त्राएली उसके चेहरे के तेज के कारण उसकी ओर देख नहीं पाए थे (2 कुरिन्थियों 3:7)। '' क्योंकि जब वह जो घटता जाता था तेजोमय था, तो वह जो स्थिर रहेगा और भी तेजोमय क्यों न होगा'' (2 कुरिन्थियों 3:11)। इस संदर्भ में घटता जाने वाला पत्थरों पर लिखी गई सेवकाई को कहा गया है, या यूं कहें कि दस आज्ञाओं को। इफिसियों 2:15 में पौलुस ने आगे घोषणा की, ''और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।'' ध्यान दें कि दोनों ही वचनों में हमें यह स्पष्ट बात मिलती है कि पुरानी व्यवस्था हट रही थी या मिटाई जाने वाली थी और इसमें दस आज्ञाएं भी होनी थी।

परमेश्वर ने ऐसी व्यवस्था क्यों देनी थी, जो दोषयुक्त हो। व्यवस्था वास्तव में दोषयुक्त नहीं थी। इसने वह काम किया जिसके लिए इसे बनाया था, यानी इसने लोगों को पापों की समझ दी और मसीह तक लेकर आई जो जीवन दे सकता है। समस्या व्यवस्था की नहीं थी। समस्या तो मनुष्य की निर्बलता और उसके पापी होने की थी जो व्यवस्था को पूरा नहीं कर पाया।

अब जबकि व्यवस्था को हटा दिया गया है तो इस बात के लिए आज हमें क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए? उसके अधिकार के लिए हम पुराने नियम के प्रावधानों में वापस नहीं जा सकते। दस आज्ञाओं सहित व्यवस्था की कोई भी बात आज प्रभावी नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह बहुत सी धार्मिक बातें जो आज पाई जाती हैं उनका कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वह अधिकार केवल पुराने नियम में मिलता है। इसमें याजकाई, दशमांस, सब्त को दिन को मानना और गाने में वाद्य संगीत शामिल हैं। यही कारण कि आज जानवरों के बलिदान नहीं दिए जाते। ऐसा नहीं है कि हम पुराने नियम की कोई आज्ञा जो हमें अच्छी लगती हो उसे उठाकर नये नियम में डाल दें। असल में अगर हम व्यवस्था की एक बात मानते हैं तो हम पुरी की पुरी व्यवस्था को मानने के बाध्य हैं (गलतियों 5:3)। हमें पुरानी व्यवस्था की एक भी बात मानने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि नई व्यवस्था उससे कहीं उत्तम है। अगले पाठ में हम उन कुछ उत्तम बातों पर चर्चा करेंगे।

क्षमा पाए हुए (इफ़सियों 1:7,8)

जे लाकहर्ट

हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपराधों की क्षमा, उस के उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया।

आयत 7. पौलुस के मन में दो कार्य थे, जब उस ने ''उस के लहू के द्वारा छुटकारा'' और ''अपराधों की क्षमा'' (1:7) की बात लिखीं यानि ''छुटकारा'' क्रूस पर हुआ था जब मसीह के लहू से हमारी छुड़ौती की कीमत चुकाई गई। ''क्षमा'' तब होती है जब पापी लोग पश्चात्तापी विश्वासियों के रूप में जो उस में बपतिस्मा लेते हैं ''उस में'' प्रवेश करते हैं (प्रेरितों 2:38)।

क्षमा पवित्र शास्त्र में बताई गई चौथी आत्मिक आशीष है। यहां पर प्रयुक्त यूनानी संज्ञा शब्द यूनानी क्रिया शब्द से लिए गए शब्द का परिणाम है, जिसका अर्थ है ''भगाना।'' हमें बलि के उस बकरे का स्मरण आता है जिसे मूसा की व्यवस्था के अधीन लोगों को इस्त्राएल के पाप लाद कर ''जंगल में भेजा'' जाता था (लैव्यव्यवस्था 16:21)। भेजने का विचार भजन संहिता में भी मिलता है। दाऊद ने लिखा, ''उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उस ने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है'' (भजन संहिता 103:12)। मीका ने कहा, ''तू उनके सब पापों को गहिरे समुद्र में डाल देगा'' (मीका 7:19)। परमेश्वर के लिए बात करते हुए यशायाह ने यही तस्वीर दिखाई, ''मैं वही हूं जो अपने नाम के निमित तेरे अपराधों को मिटा देता हूं और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा'' (यशायाह 43:25)। यीशु ने छूटकारे और क्षमा के विचारों को मिला दिया। उस ने कहा, ''मनुष्य का पुत्र, इसलिए नहीं आया कि उस की सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे'' (मत्ती 20:28); ''यह वाचा का मेरा वह लोहु है, जो बहुतों के पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26:28)।

अपराधों शब्द से लिया गया है, जो पाप को ''नैतिक मापदण्डों का उल्लंघन,'' ''चूक,'' या ''एक ओर गिरना'' दिखाता है। यह इस शब्द को नये नियम के अन्य शब्दों से, जिनमें पाप का वर्णन है, जैसे (''विधर्म'') (''अधर्म'') से अलग करता है। ''पाप'' के लिए नये नियम का सब से प्रसिद्ध शब्द है ''जो न केवल पाप के कार्यों के लिए'' बल्कि शक्ति, आदत, स्थिति के रूप में पाप पर लागू होता है। जो व्यक्ति अपराधों में वास करता है, वह विधर्म में जीवन बिता रहा है और पाप की शक्ति के वश में है। जब कोई व्यक्ति मसीह में आता है तो परमेश्वर का अनुग्रह उस के विधर्म को क्षमा कर देता और उसे धर्मी बना देता है। उसे पाप की शक्ति, दोष और परिणामों से मुक्त कर दिया जाता है। यानी परमेश्वर अनुग्रहपूर्ण उसे एक बदला हुआ जीवन जीने के लिए सही दिशा में लाता और उसे उस के योग्य बनाता है।

आयत 7 के अनुसार यूनानी उपसर्ग का अनुवाद है जिसमें नियन्त्रण की बात करते हुए ''अधिकार'' का विचार पाया जाता है। परमेश्वर का छुटकारा और क्षमा को धन अर्थात उस के अनुग्रह के धन या बहुतायत से चलाया जाता है (देखें 1:6)।

अनुग्रह के रूप में ईश्वरीय आजादी अर्थात ईश्वरीय भलाई की वह कृपा जिसे कमाया नहीं जा सकता, को ही पौलुस बहुत बार स्तुति और आश्चर्य के साथ बढ़ा कर दिखाता है। यहां पर दान के दिए जाने का इतने जबर्दस्त ढंग से होना अर्थात अनुग्रह को धनवान होने के गुण के साथ ही दिखाया गया है। परमेश्वर की ओर से हम पर मसीह में किए गए, अनुग्रह के धन की जबर्दस्त धारणा विशेष रूप से पौलुही है।

मसीह के क्रूस को देखने से मसीही लोगों को परमेश्वर के अनुग्रह के धन के लिए धन्यवाद देना आरम्भ करने की अनुमति मिलती है। क्रूस के ऊपर ही परमेश्वर ने छुटकारे का मार्ग देने और अयोग्य मनुष्य जाति को क्षमा करने के लिए अपने ही पुत्र की मृत्यु होने दी। परमेश्वर के अनुग्रह का कोई अन्त नहीं है, इस के संसाधनों के खत्म होने का कोई डर नहीं है और मनुष्य की आवश्यकता पूरी न कर पाने का कोई खतरा नहीं है। रोमियों 5:20 में पौलुस ने इसे इस प्रकार से कहा है: ''जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह भी कहीं अधिक हुआ।'' परमेश्वर का अनुग्रह असीम है (देखें 2:7)।

आयत 8 देखिये. इस आयत में जिसे परमेश्वर के अनुग्रह को कहा गया है। पौलुस ने कहा कि यह अनुग्रह हम पर बहुतायत से किया गया। ''बहुतायत से'' के लिए यूनानी क्रिया शब्द का अर्थ है ''बहुत मात्रा में, भरपुर होना।'' सकर्मक के रूप में इस्तेमाल करने पर इस शब्द का अर्थ ''भरपूरी का कारण'' होता है। पौलुस इस बात की पुष्टि कर रहा था कि परमेश्वर का अनुग्रह हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति से कहीं बढ़कर है।

पौलूस की सेवकाई और सन्देश पर थिस्सलुनीकियों की प्रतिक्रिया

अर्ल डी एडवर्डस

इसलिये हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही हैं) ग्रहण किया; और वह तुम विश्वासियों में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशील है। इसलिये तुम, हे भाइयो, परमेश्वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने लगे जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दु:ख पाया जैसा उन्होने यहूदियों से पाया था, जिन्होंने प्रभु यीशु को और भविष्यद्वक्ताओं को भी मार डाला और हम को सताया, और परमेश्वर उन से प्रसन्न नहीं, और वे सब मनुष्यों का विरोध करते हैं, और वे अन्यजातियों से उनके उद्धार के लिये बातें करने से हमें रोकते हैं कि सदा अपने पापों का नपुआ भरते रहें; पर उन पर परमेश्वर का भयानक प्रकोप आ पहुँचा है।

आयत 13. फिर, पौलुस ने वर्णन किया कि वह निरन्तर या बार-बार, परमेश्वर का

धन्यवाद करेगा और जिस प्रकार से थिस्सलुनीकियों ने वचन ग्रहण किया, उसके लिए उनकी बड़ी प्रशंसा की।

''क्रिया [यूनानी] शब्द पारालाम्बानो, 'ग्रहण करना' और इसका परस्पर सम्बन्धी शब्द पाराडिडोमी, 'सुपुर्द करना' मसीही विश्वास का ग्रहण और प्रेषण के लिये दोनों ही लगभग एक ही समान तकनीकी शब्द थे। आयत के अगले हिस्से में, पौलुस ने कहा परमेश्वर का वचन उनमें प्रभावशील है। ''पूरा करना'' का अनुवाद यूनानी शब्द एनेर्गेओ से किया गया है। ''आर.एस.वी क्रिया को मध्यम पुरूष में बताता है ('कार्य जारी है, 'यूनानी एनेर्गेइटाई), परन्तु यह अकर्मक (कार्य का पूरा न होना) भी हो सकता था: 'कार्य को पूरा किया गया (विशेषकर परमेश्वर द्वारा)'; अर्थात् अधिक प्रभावित नहीं कर पाया।''

जब पौलुस और उसके सहकर्मियों ने वहाँ प्रचार किया, जो प्रचार किया गया उसके सन्देश को थिस्सलुनीकियों ने सिर्फ इस लिये ग्रहण नहीं किया क्योंकि वे पौलुस या उसके साथियों को पसंद करते थे। उन्होंने जो ग्रहण किया मनुष्यों का वचन नहीं था; परन्तु, उन्होंने सन्देश को इसलिये ग्रहण किया क्योंकि वे जान चुके थे कि वह परमेश्वर का वचन था। उन्होंने बिल्कुल सही किया क्योंकि वह सचमुच परमेश्वर की ओर से था। उसका वचन उनमें ''अपने कार्य'' को पूरा कर रहा था (इफिसियों 3:30; कुलस्सियों 3:16; इब्रानियों 4:12 की तुलना में) जिस प्रकार उन सब में जो उस पर विश्वास करते हैं अर्थात् वे सब जो मसीही हैं।

आयत 14. परिवार का प्रतिरूप फिर से प्रभावशाली है। वे पौलुस और उसके सहकर्मियों के भाई बन्धु थे। इन भाइयों को परमेश्वर की कलीसियाओं के सदृश बनने, या ''पीछे चलने वाले'' बनने के लिये कहा गया था (''परमेश्वर के लोग''; प्रेरितों 20:28)। यह संबोधन उचित या औपचारिक नाम नहीं है। एन.आई.वी में ''परमेश्वर की कलीसियाएं'' लिखा है। ये कलीसियाएँ यहूदिया में थी, जो पलिस्तीन का दक्षिणी प्रान्त है जहाँ यरूशलेम स्थित है। वे मसीह यीशु में भी थे, जहाँ उद्धार है (2 तीमुथियुस 2:10) और जहाँ पर एक मनुष्य को बपतिस्मा द्वारा मिला दिया जाता है (रोमियों 6:3, 4)।

वे यहूदिया की कलीसियाओं के सदृश्य बन चुके थें, जिसमें वही पलिस्तीनी यहूदी मसीही अपने ही यहूदी भाइयों के हाथों सताव सहते थे (प्रेरितों 5:27-42; विशेषकर आयत 40)। अब ये गैर यहूदी मसीही अपने ही स्थानीय लोगों के हाथों दु:ख पा रहे थे। ''तुम्हारे अपने लोग'' यह भाव यूनानी शब्द (सुम्फुलेतेस) से लिया गया है, ''भौगोलिक क्षेत्र का कुछ हिस्सा और थिस्सलुनीके नगर के यहूदियों को मिलाकर हो सकता है, परन्तु विरोध में यह एक बड़े गैर यहूदी तत्व की ओर इशारा करता है। तो भी, ये थिस्सलुनीके के यहूदी ही थे जिन्होंने थिस्सलुनीके में मसीहियों के विरूद्ध शुरूआती विद्रोह को भड़काया था (प्रेरितों 17:1-9)।

आयत 15. आयत 14 के अंत में यहूदियों के नाम का उल्लेख हुआ है, पौलुस ने उसके व्यवहार के बारे में खरा-खरा और सीधा-सीधा निन्दा के योग्य समझा जाना

बताया, जिसमें सिर्फ पलिस्तीनी यहूदी नहीं थे, परन्तु सभी यहूदी सामान्य रूप से शामिल हैं। पौलुस के सभी लेखों में से यह नि:सदेह किसी मनुष्य में सबसे अधिक स्पष्ट दोषारोपण वाला भाग है। पौलुस अपने संगी यहूदियों को प्रेम करता था (रोमियों 9:1-5), परन्तु वही प्रेम था जो चाहता था कि वह उनके बुरे व्यवहार के विरूद्ध बोले। उसे यह प्रमाणित करना था कि जो भी मनुष्य अपना चाल-चलन इन यहूदियों के समान रखता था, वह केवल मसीह का ही इन्कार नहीं करता परन्तु परमेश्वर का और जो कुछ वह करता है उसका भी इनकार करता था।

पौलुस ने कहा यहूदियों ने प्रभु यीशु को मार डाला। वे उसे रोमी अधिकारियों के पास लाए जिन्होंने पिलातुस की इच्छा के विरूद्ध जाकर उसे मार डाला क्योंकि वे ऐसा ही चाहते थे (मत्ती 27:15-26; प्रेरितों 2:22-24)। उसने कहा उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं को भी मार डाला। जहाँ मत्ती 23:29-32 उनके द्वारा ''भविष्यद्वक्ताओं की हत्या'' बारे में बताता है, वहीं प्रेरितों 7:51, 52. लूका 11:47-51 में भी इसका वर्णन मिलता है, जिसमें एक धर्मी भविष्यद्वक्ताओं, ''जकर्याह, जो वेदी और परमेश्वर के मन्दिर के बीच में घात किया गया'' (आयत 51)। यह भविष्यद्वक्ता वह जकर्याह नहीं है जिसने पुराने नियम में इस नाम की पुस्तक लिखी थी। परन्तु, यह वही था जिसका वर्णन 2 इतिहास 24:20, 21 में पाया जाता है; जिस पर ''पथराव किया गया था।'' यिर्मयाह एक और अन्य भविष्यद्वक्ताओं था जिसे बंदीगृह में डाला गया और जिसे कई बार मृत्यु का सामना भी करना पड़ा था।

पौलुस ने कहा था कि यहूदियों ने उन्हें सताया था। के.जी.वी में लिखा है ''हमें सताया गया।'' यहाँ, उसने थिस्सलुनीके नगर में हुए अपने अनुभव को बताया जब उसने और उसके सहकर्मियों ने दु:ख उठाया (प्रेरितों 17:1-10)। उसने कहा कि पुत्र को ग्रहण न करके उन्होंने परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया; इस प्रकार, उन्होंने पिता का भी आदर नहीं किया (यहून्ना 5:22-24; इब्रानियों 11:6)। अन्त में उसने कहा कि वे सब मनुष्यों का विरोध करते थे। जब पौलुस ने यहूदियों पर ''सब मनुष्यों का विरोध करने वाले'' की छाप लगाई, तब उसने स्वयं को उनमें शामिल नहीं किया जो यहूदियों पर मानव-जाति से घृणा करने का दोष लगाते थे। परन्तु, पौलुस जिस विरोध की बात कर रहा था वह उन यहूदी वि श्वासियों के बारे में था जो अन्यजातियों के बीच सुसमाचार के प्रचार करने का विरोध करते थे।

आयत 16. पौलुस अन्य-जातियों तक सुसमाचार के पहुँचाने पर यहूदियों के विरोध (आयत 15) के बारे में विशेषकर बात कर रहा था जिसे इस आयत में देखा जा सकता है। उसने कहा कि वे अन्यजातियों से उनके उद्धार के लिये बातें करने से हमें रोकते हैं। प्रेरितों 22:21, 22 में, यहूदी पौलुस की बात परमेश्वर ने उसे ''अन्य-जातियों'' के पास भेजा है कहते तक सुनते रहे और जब वह ऐसा कहा चुका, वे ऊँचें शब्द से चिल्लाए, ''ऐसे मनुष्य का अंत करो...।''

''अन्यजातियों'' का यूनानी शब्द (एथनोस) है, जिसका प्रायोगिक अर्थ ''जातियाँ'' है और यहूदी जाति को छोड़कर इसका प्रयोग सभी जातियों के लिये होता है या ''जैसा

कि वे इसे अब्राहम की वाचा से बाहर की जातियाँ समझते थे।

बहुत से अनुच्छेद अन्यजातियों को परमेश्वर के राज्य से बाहर रखने के यहूदियों के स्वार्थ को प्रगट करते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि अपने को सबसे उच्च कुल के लोग समझते थे। वे ''जलते'' थे (प्रेरितो 13:42-45), परमेश्वर का पूरा ध्यान चाहते थे। इसलिये पौलुस ने कहा कि, ''वे सदा अपने पापों का ढेर चरम सीमा तक लगाते रहें'' (एन.आई.वी) या वे सदा अपने पापों का नपुआ भरते रहें। एक के ऊपर दूरी अनाज्ञाकारिता को बढ़ा रहे थे। पौलुस ने उन्हें चेतावनी दी कि परमेश्वर की सहनशीलता की एक सीमा है और उन्हें अवश्य ही दण्ड मिलेगा।

पौलुस ने कहा, पर उन पर भयानक प्रकोप [परमेश्वर का भयानक प्रकोप] आ पहुँचा है। ''प्रकोप'' यूनानी शब्द (ओरगे) है, जो वास्तव में परमेश्वर के नियम के विरूद्ध किसी भी प्रकार का बलवा करने पर परमेश्वर का कठोर निर्णय होता है। यहाँ पर इस शब्द का तात्पर्य दण्ड से है, क्योंकि उसका निर्णय अनाज्ञाकारी के सिर पर दण्ड के रूप में आ गिरेगा। यह तो तय था कि परमेश्वर उन्हें दण्ड दे जिसे पौलुस ने भूतकाल में कहा था जबकि वह पहले ही दे चुका है। यशायाह 53:5 इसी के समान एक उदाहरण है, जहाँ यह कहा गया है, ''उसे भेदा गया'' (वर्णन दिया गया है)। वे ''क्रोध और परमेश्वर का धर्म से न्याय प्रगट करने के दिन के लिये क्रोध कमा रहे'' थे (रोमियों 2:5, 6)। यह दण्ड यहूदी राष्ट्र का विनाश लेकर 70 ई. (तीतुस के अधीन) में पहली बार दण्ड की घटना के रूप में सामने आया, और अंतिम न्याय में यह अपने पूरे भयानक रूप में घटित होगा। ''भयानक'' यूनानी शब्द (टेलोस) से लिया गया है, जिसका अर्थ सम्भवत: यह है कि ''अंतत:'' परमेश्वर का क्रोध या प्रकोप उन पर आ पहुँचा है।

स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो

वेयन बैरियर

बाइबल साफ साफ निर्देश देती है कि हमारी प्राथमिकता की चीजें जिन पर हमारी ऊर्जा, ध्यान और जोर लगना चाहिए वह क्या हैं। कई बार हम इस निर्देश को भूल कर अपने जीवन पर कम महत्वपूर्ण चीजों को नियन्त्रण करने देते हैं। हम आसानी से बड़े जटिल, व्यस्त, मांगों से भरी जीवन शैली में जाते हुए लगते हैं जो मसीही सेवा और बल को जीवन के अन्य कई आयामों से कम प्राथमिकता देते हैं।

कुलुस्सियों 3:1-4 से हम पढ़ते हैं, ''अत: जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ, क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।

जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।''

मत्ती 7:33 में यीशु ने कहा, ''इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।'' इस आयत में यीशु ने उन चीजों के बारे में बताया जिनके पीछे पड़कर आदमी आम तौर पर परमेश्वर के राज्य को छोड़ उन्हीं पर जोर देता है।

मत्ती 6:24 में यीशु ने कहा, ''कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।''

हमारे लिए ''स्वर्गीय वस्तुओं'' को प्राथमिकता देना सीखना आवश्यक है। ऐसा करने का अर्थ यह बिल्कुल नहीं है, कि हम जीवन की किसी और बात पर जोर नहीं दे सकते। निश्चय ही दूसरी चीजें भी आवश्यक हैं। हमें काम काज, नौकरी, और ऐसी और चीजों पर कुछ जोर देते हुए जीने के लिए काम करना आवश्यक है। यदि हमारी प्राथमिकता ''स्वर्गीय वस्तुएं'' हैं तो जीवन के अन्य क्षेत्रों में हमारे प्रयास हमारी बड़ी प्राथमिकता यानी मसीह से प्रभावित होंगे। जब हम सफलतापूर्वक ''पहले उन स्वर्गीय वस्तुओं की खोज'' करेंगे तो हमारी नौकरी, काम आदि में दिया जाने वाले जोर से परमेश्वर की सेवा अधिक होगी।

कुलुस्सियों 3:5 में पौलुस ने कुछ चीजों का उल्लेख किया है जो ''मार'' डाली जानी आवश्यक हैं यानी उन चीजों की, जो पृथ्वी की हैं। ये चीजें सांसारिक लक्ष्यों पर दिए जाने वाले जोर के कारण हैं। उनमें व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ शामिल है जो मूर्तिपूजा के बराबर है। हमें अनन्त जीवन का वायदा दिया गया है यदि हम मरने तक वफादारी से परमेश्वर के लिए जीएं तो (प्रकाशितवाक्य 2:10)। बहुत से लोगों को पृथ्वी पर उम्र लम्बी करने के लिए बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। मसीह हर व्यक्ति के लिए अनन्त जीवन की आशा पाने को सम्भव बना देता है (यूहन्ना 3:16)। हम से केवल इस जीवन में उसे सबसे अधिक प्राथमिकता देने को कहा जाता है। ''उसका वचन सबसे बड़ी प्राथमिकता'' का अर्थ देता है।

पौलुस के अंतिम दिन

हार्वे पोर्टर

नये नियम में हमारे प्रभु मसीह के बाद सबसे अधिक प्रसिद्ध व्यक्ति पौलुस है। नये नियम की इतिहास की पुस्तक, प्रेरितों के काम में उसे सबसे प्रमुख स्थान दिया गया है। कलीसियाओं के नाम उसने किसी भी अन्य लेखक से बढ़कर पत्र लिखे। बाइबल के छात्रों के रूप में वह हमारा सबका पसंदीदा व्यक्ति है। अपने जीवन में और परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने में वह बहुत कुछ मसीह के जैसा है।

उसकी दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं में वैद्य लूका उसका सहयात्री था। अपने लिखे अंतिम पत्र 2 तीमुथियुस में पौलुस ने उसे लिखा, ''केवल लूका मेरा साथ है।''

इसका अर्थ यह है कि जीवन के अंतिम वर्षों में रोम में रहते हुए लुका उसके साथ था।

इतिहास यह संकेत देता हुआ लगता है कि पतरस और पौलुस दोनों को दुष्ट शासक नीरो ने रोम में मरवा डाला था। बाइबल के कई छात्र चकित होते हैं कि लूका ने पौलुस की मृत्यु की परिस्थितियों को क्यों नहीं लिखा। पौलुस की मृत्यु की बात लिखने के बजाय लूका प्रेरितों के काम की पुस्तक की समाप्ति अनन्ददायक बात से करता है। वह लिखता है, ''वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा, और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक-टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु की बातें सिखाता रहा'' (प्रेरितों 28:30, 31)।

रोमी सरकार ने पौलुस को ''अपने भाड़े के घर में'' रहने की अनुमति दी हुई थी। बेशक रोमियों को यह पता था कि वह एक राजनैतिक कैदी है क्योंकि यहूदियों ने उस पर बे-बुनियाद आरोप लगाए थे। मसीहियत रोमी साम्राज्य के लिए कोई खतरा नहीं थी, बिल्कुल वैसे ही जैसे आज की किसी सरकार के लिए कोई खतरा नहीं है। लूका हमें विश्वास दिलाता है कि बहुत से मसीही लोग जिन्हें पौलुस ने सिखाया था उसकी कैद के दौरान उससे मिलने आते थे। पौलुस से लोग बहुत प्रेम करते थे, चाहे कलीसिया के कुछ लोग उसके विरोध में भी थे।

लूका ने कहा है कि वह निडरता से और बिना रूकावट के परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता था। यह उसके पूरे जीवन की विशेषता थी। वह जहां भी जाता प्रचार ही करता था। प्रचार उसका जीवन, उसका समर्पण और उसकी मजबूरी थी। उसने लिखा, ''यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं तो मुझ पर हाय'' (1 कुरिन्थियों 9:16)। विश्वासी सुसमाचार प्रचारकों को प्रचार करना अच्छा लगता है। विश्वासी मसीहियों को प्रचार सुनना अच्छा लगता है। पौलुस को प्रचार करना अच्छा लगता था। पौलुस ने कहा, ''मैं परमेश्वर के सारे अभिप्राय को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका'' (प्रेरितों 20:27)। ''जो-जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने ... से कभी न झिझका'' (प्रेरितों 20:20)। रोमी मसीहियों के नाम लिखते हुए उसने कहा, ''मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं'' (रोमियों 1:15)। पौलुस को प्रचार करना और मसीह के अगम्य धन को बताना अच्छा लगता था। केवल सांसारिक व्यक्ति ही प्रचार का मजाक उड़ाएगा और उसका तिस्कार करेगा।

प्रेरितों के काम की महान् पुस्तक में लूका के अंतिम शब्द थे ''और (पौलुस) प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।'' हमारा सारा प्रचार और शिक्षा हमारे प्रभु यीशु मसीह पर केन्द्रित होना चाहिए। पौलुस ने कहा, ''मसीह ... महिमा की आशा है'' (कुलुस्सियों 1:27)। कुलुस्से के मसीहीयों को उसने और लिखा, ''अत: जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो। और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओं; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अधिकाधिक धन्यवाद करते रहो'' (कुलुस्सियों 2:6, 7)। उसने यह भी कहा, ''मेरे लिए जीवित रहना मसीह और मर जाना लाभ है'' (फिलिप्पियों 1:21)। वह यह भी कह सकता था, ''मेरे लिए प्रचार करना और सिखाना मसीह है।''

मुझे लगता है कि लूका आरम्भिक कलीसिया और पौलुस के अपने इतिहास को प्रोत्साहित करने वाली बात के साथ समाप्त करना चाहता था। पौलुस ने अपने जीवन की समाप्ति यह करते हुए की, कि जो उसे सबसे अधिक प्रिय था यानी प्रभु यीशु मसीह का प्रचार और शिक्षा देना, वो उसने किया।

''मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं'' (2 तीमुथियुस 4:7, 8)।

मनपरिवर्तन

डिल डिलन

कनवर्शन या मनपरिवर्तन असल में है क्या? यह क्यों आवश्यक है? जब कोई व्यक्ति मनपरिवर्तन करता है तो असल में क्या होता है? इन प्रश्नों के सही-सही उत्तर बाइबल में दिए गए हैं।

मनपरिवर्तन का मतलब बदलाव ही है। प्रकृति में कोई बदलाव देखने को मिलते हैं। लकड़ी का कागज बनता है; कोयले का टुकड़ा बदलाव की प्रक्रिया में से गुजरने के बाद हीरा बन जाता है। धर्म में या मनपरिवर्तन का अर्थ पाप के जीवन से धार्मिकता के जीवन में बदलाव है। मत्ती 18:3 में यीशु ने कहा था, ''मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे।'' जब किसी ने मनपरिवर्तन करना होता है तो उसके जीवन में एक प्रकार की कमी सी आ जाती है। यह कमी अनाज की नहीं बल्कि अर्थ और उद्देश्य की कमी होती है। हमारा विवेक परेशान होने लगता है जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने वचन के द्वारा उस मन पर दबाव डालता है और उसे यह प्रश्न पूछने के लिए विवश करता है कि ''मैं अपने पाप का क्या कर सकता हूं?''

उसे सब कुछ बेकार लगने लगता है। हम अपने अंत के पास पहुंच गए हैं। सांसारिक सुख और गतिविधियां बेकार लगने लगती हैं। अंत में जब तक हम परमेश्वर की इच्छा को नहीं मानते तब तक चैन या शांति नहीं मिलती।

जैसे-जैसे जीवन के कई खतरों और जोखिमों के बीच हमारे अस्तित्व की कमजोरी, और अपनी मृत्यु के सुनिश्चित होने पर पता चलता है वैसे-वैसे हम आत्मिक वास्तविकताओं के प्रति जागरूक होकर परमेश्वर और मसीह के बिना अपनी बिगड़ी हुई अवस्था पर ध्यान करने लगते हैं। हम अपराधी हैं। हमें बदलना आवश्यक है।

मनपरिवर्तन में ये बातें शामिल हैं:

1. मन का बदलता। यह विश्वास से होता है (प्रेरितों 15:9)।

2. निष्ठा का बदलना। इसे दूसरों के सामने मसीह का अंगीकार करके दिखाया जाता (रोमियों 10:10; प्रेरितों 8:37)।

3. स्थिति का बलदना। सम्बन्ध में यह बदलाव बपतिस्मे के समय आता है (गलातियों 3:26, 28)।

मनपरिवर्तन अनिवार्य है क्योंकि अपरिवर्तित पापी परमेश्वर के सामने अनुपयुक्त और अस्वीकार्य है। पापियों के लिए पवित्र लोगों में परिवर्तित होना आवश्यक है। यह इतना बड़ा काम है कि इसे केवल परमेश्वर ही पूरा कर सकता है।

यदि मुझे मनपरिवर्तन करना हो और प्रभु को जानना है यानी यदि मुझे अपने आपको बदलना हो तो मेरे लिए दीन होकर प्रभु को ढूंढना और उसकी आज्ञाओं को मानना आवश्यक है। प्रभु यीशु मसीह ने जो कि परमेश्वर का इकलौता पुत्र है, हमारे उद्धार के लिए इस संसार में आया (रोमियों 5:8)। वह कलवरी के क्रूस पर लटकाया गया और उसने बड़े ही कष्टदायक ढंग से दुख सहा ताकि वह उन सब को क्षमा कर सके जो मन फिराकर उसके सुसमाचार की आज्ञा को मानते हैं।

क्या आपका मन परिवर्तन हो गया है?

क्रूस से संदेश: क्षमा करना

रॉयस फ्रैडरिक

''उस स्थान पर जो गुलगुता अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहलाता है, पहुंचकर उन्हों ने उसे पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उस ने चखकर पीना न चाहा। तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया ...'' (मत्ती 27:33-35)।

उत्तम गुरू इस बार न तो गलील की झील के किनारे के पास सुन्दर पहाड़ियों में बैठा था और, न यरूशलेम के भव्य मन्दिर के ओसारे में। उसकी हर बात को सुनने को उत्सुक वाह-वाह करने वाली भीड़ भी नहीं थी। इसके बजाय सरेआम उसकी हत्या की जा रही थी। उसके मित्र भाग गए थे। धार्मिक अगुओं ने उसे परमेश्वर का शत्रु बताया था। और रोमी हाकिम ने यह घोषणा करते हए कि ''मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता'' (लूका 24:4; देखें आयत 14; यूहन्ना 18:38; 19:4, 6)।

उसे मृत्यु दण्ड दिए जाने का अधिकार दे दिया था। इस बार उसने क्या कहना था? ''तब यीशु ने कहा, 'हे पिता, इन्हे क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं' '' (लूका 23:34)।

घाव देने वालों को क्षमा कर देना बहुत कठिन हो सकता है, कई सालों बाद भी वह भूल नहीं सकता। परन्तु यीशु ने इन लोगों को क्षमा कर दिया जबकि वे उसकी हत्या कर

रहे थे। उसने उनके लिए जीवन चाहा जिन्होंने उसे मृत्यु दी। परमेश्वर नहीं चाहता कि किसी भी व्यक्ति का अनन्तकाल के लिए नाश हो (यहेजकेल 33:11; 2 पतरस 3:9; 1 तीमुथियुस 2:4)।

गलील में यीशु ने भीड़ के लोगों से कहा था, ''... अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो'' (मत्ती 5:44)। उसने बताया और फिर करके दिखाया।

उसने खबरदार किया कि ''... यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा'' (मत्ती 6:12, 15, 14; देखें रोमियों 12:14-21; याकूब 2:13; कुलुस्सियों 3:13)। हमारे लिए स्वर्ग में प्रवेश के लिए क्षमा पाए हुए और क्षमा करने वाले होना आवश्यक है।

प्रिय पाठक, बाइबल के प्रति आपकी जवाबदेही है। पौलुस की ताड़ना को मानो और ''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो'' (कुलुस्सियों 3:17)। याद रखो कि आज अगर परमेश्वर के वचन को हम हलके में लेते हैं तो उस सबसे बड़े दिन में यानी क्यामत के दिन हमारा न्याय यही करेगा (यूहन्ना 12:48)।

मेरा उद्धार कैसे हो सकता है?

''*परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए*'' (यूहन्ना 3:17)।

''*यीशु ने उससे कहा, 'मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता*'' (यूहन्ना 14:6)। ''*... यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे*'' (यूहन्ना 8:24)। ''*हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएं? क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। ... हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। ... ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो*'' (रोमियों 6)।

यीशु मसीह का सुसमाचार यह है कि वह हमारे लिए मरा गया, यह कि दफनाया गया और जी उठा। उद्धार तभी मिलता है जब हम क्षमा के लिए यीशु के पास आते हैं।